لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٨﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ وَلَاۤ اَوْلَادُكُمْ ع ١٣

को ख़बर नहीं[20] ऐ ईमान वालो तुम्हारे माल न तुम्हारी औलाद कोई चीज़ तुम्हें अल्लाह के

عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٩﴾ وَاَنْفِقُوْا

ज़िक्र से ग़ाफ़िल न करे[21] और जो ऐसा करे[22] तो वोही लोग नुक़्सान में हैं[23] और हमारे दिये में

مِنْ مَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُوْلَ رَبِّ لَوْ

से कुछ हमारी राह में ख़र्च करो[24] क़ब्ल इस के कि तुम में किसी को मौत आए फिर कहने लगे ऐ मेरे रब

لَاۤ اَخَّرْتَنِيْۤ اِلٰۤى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ فَاَصَّدَّقَ وَاَكُنْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٠﴾

तू ने मुझे थोड़ी मुद्दत तक क्यूं मोहलत न दी कि मैं सदक़ा देता और नेकों में होता

وَلَنْ يُّؤَخِّرَ اللّٰهُ نَفْسًا اِذَا جَآءَ اَجَلُهَا ؕ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١١﴾ ع ١٤

और हरगिज़ अल्लाह किसी जान को मोहलत न देगा जब उस का वा'दा आ जाए[25] और अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है

اٰیاتها ١٨ | ٦٤ سُوْرَةُ التَّغَابُنِ مَدَنِيَّةٌ ١٠٨ | رکوعاتها ٢

सूरए तग़ाबुन मदनिय्या है, इस में अठ्ठारह आयतें और दो रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ ۚ

अल्लाह की पाकी बोलता है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में उसी का मुल्क है और उसी की ता'रीफ़[2]

وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١﴾ هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ فَمِنْكُمْ كَافِرٌ وَّمِنْكُمْ

और वोह हर चीज़ पर क़ादिर है वोही है जिस ने तुम्हें पैदा किया तो तुम में कोई काफ़िर और तुम में

और मोमिनीन को ज़िल्लत वाला। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है : 20 : इस आयत के नाज़िल होने के चन्द ही रोज़ बा'द इब्ने उबय मुनाफ़िक़ अपने निफ़ाक़ की ह़ालत पर मर गया। 21 : पंजगाना नमाज़ों से या क़ुरआन शरीफ़ से 22 : कि दुन्या में मश्ग़ूल हो कर दीन को फ़रामोश कर दे और माल की मह़ब्बत में अपने ह़ाल की परवा न करे और औलाद की ख़ुशी के लिये राह़ते आख़िरत से ग़ाफ़िल रहे 23 : कि उन्हों ने दुन्याए फ़ानी के पीछे दारे आख़िरत की बाक़ी रहने वाली ने'मतों की परवा न की। 24 : या'नी जो सदक़ात वाजिब हैं वोह अदा करो। 25 : जो लौह़े मह़फ़ूज़ में मक्तूब है। 1 : सूरए तग़ाबुन अक्सर के नज़्दीक मदनिय्या है और बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि मक्किय्या है सिवाए तीन 3 आयतों के जो "یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّ مِنْ اَزْوَاجِكُمْ" से शुरूअ़ होती हैं, इस सूरत में दो 2 रुकूअ़, अठ्ठारह 18 आयतें, दो सो इक्तालीस 241 कलिमे, एक हज़ार सत्तर 1070 ह़र्फ़ हैं। 2 : अपने मुल्क में मुतसर्रिफ़ है जो चाहता है जैसा चाहता है करता है, न कोई शरीक न साझी, सब ने'मतें उसी की हैं।

www.dawateislami.net

مُّؤْمِنٌ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝٢ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ

कोई मुसल्मान[3] और अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है उस ने आस्मान और ज़मीन हक़

بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ ۚ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ۝٣ يَعْلَمُ مَا فِي

के साथ बनाए और तुम्हारी तस्वीर की तो तुम्हारी अच्छी सूरत बनाई[4] और उसी की तरफ़ फिरना है[5] जानता है जो कुछ

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ

आस्मानों और ज़मीन में है और जानता है जो तुम छुपाते और ज़ाहिर करते हो और अल्लाह दिलों

بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝٤ اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ ۫ فَذَاقُوْا

की जानता है क्या तुम्हें[6] उन की ख़बर न आई जिन्हों ने तुम से पहले कुफ़्र किया[7] और अपने

وَبَالَ اَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝٥ ذٰلِكَ بِاَنَّهٗ كَانَتْ تَّاْتِيْهِمْ

काम का वबाल चखा[8] और उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है[9] येह इस लिये कि उन के पास

رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالُوْٓا اَبَشَرٌ يَّهْدُوْنَنَا ۫ فَكَفَرُوْا وَتَوَلَّوْا وَّاسْتَغْنَى

उन के रसूल रोशन दलीलें लाते[10] तो बोले क्या आदमी हमें राह बताएंगे[11] तो काफ़िर हुए[12] और फिर गए[13] और अल्लाह ने बे नियाज़ी को

اللّٰهُ ؕ وَاللّٰهُ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ۝٦ زَعَمَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنْ لَّنْ يُّبْعَثُوْا ؕ

काम फ़रमाया और अल्लाह बे नियाज़ है सब ख़ूबियों सराहा काफ़िरों ने बका कि वोह हरगिज़ न उठाए जाएंगे

قُلْ بَلٰى وَرَبِّيْ لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا عَمِلْتُمْ ؕ وَذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ

तुम फ़रमाओ क्यूं नहीं मेरे रब की क़सम तुम ज़रूर उठाए जाओगे फिर तुम्हारे कौतक (आ'माल) तुम्हें जता दिये जाएंगे और येह अल्लाह को

يَسِيْرٌ ۝٧ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَالنُّوْرِ الَّذِيْٓ اَنْزَلْنَا ؕ وَاللّٰهُ بِمَا

आसान है तो ईमान लाओ अल्लाह और उस के रसूल और उस नूर पर[14] जो हम ने उतारा और अल्लाह तुम्हारे कामों

تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝٨ يَوْمَ يَجْمَعُكُمْ لِيَوْمِ الْجَمْعِ ذٰلِكَ يَوْمُ التَّغَابُنِ ؕ

से ख़बरदार है जिस दिन तुम्हें इकठ्ठा करेगा सब जम्अ़ होने के दिन[15] वोह दिन है हार वालों की हार खुलने का[16]

3 : हदीस शरीफ़ में है कि इन्सान की सआ़दत व शक़ावत फ़िरिश्ता ब हुक्मे इलाही उसी वक़्त लिख देता है जब कि वोह अपनी मां के पेट में होता है। **4 :** तो लाज़िम है कि तुम अपनी सीरत भी अच्छी रखो। **5 :** आख़िरत में। **6 :** ऐ कुफ़्फ़ारे मक्का ! **7 :** या'नी क्या तुम्हें गुज़री हुई उम्मतों के अह़वाल मा'लूम नहीं जिन्हों ने अम्बिया की तक्ज़ीब की **8 :** दुन्या में अपने कुफ़्र की सज़ा पाई **9 :** आख़िरत में **10 :** मो'जिज़े दिखाते। **11 :** या'नी उन्हों ने बशर के रसूल होने का इन्कार किया और येह कमाले बे अ़क़्ली व ना फ़हमी है, फिर बशर का रसूल होना तो न माना और पथ्थर का ख़ुदा होना तस्लीम कर लिया। **12 :** रसूलों का इन्कार कर के **13 :** ईमान से। **14 :** नूर से मुराद कुरआन शरीफ़ है

www.dawateislami.net

وَمَنْ يُّؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُّكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ وَيُدْخِلْهُ

और जो अल्लाह पर ईमान लाए और अच्छा काम करे अल्लाह उस की बुराइयां उतार देगा और उसे बाग़ों में

جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَاۤ اَبَدًا ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ

ले जाएगा जिन के नीचे नहरें बहें कि वोह हमेशा उन में रहें येही बड़ी

الْعَظِيْمُ ۝٩ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَاۤ اُولٰٓىٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِ

काम्याबी है और जिन्हों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतें झुटलाईं वोह आग वाले हैं

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝١٠ ع مَاۤ اَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ ع ١٥

हमेशा उस में रहें और क्या ही बुरा अन्जाम कोई मुसीबत नहीं पहुंचती[17] मगर अल्लाह के

اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يُّؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ يَهْدِ قَلْبَهٗ ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝١١ وَ

हुक्म से और जो अल्लाह पर ईमान लाए[18] अल्लाह उस के दिल को हिदायत फ़रमा देगा[19] और अल्लाह सब कुछ जानता है और

اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاِنَّمَا عَلٰى رَسُوْلِنَا

अल्लाह का हुक्म मानो और रसूल का हुक्म मानो फिर अगर तुम मुंह फेरो[20] तो जान लो कि हमारे रसूल पर सिर्फ़

الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ۝١٢ اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝١٣

सरीह़ पहुंचा देना है[21] अल्लाह है जिस के सिवा किसी की बन्दगी नहीं और अल्लाह ही पर ईमान वाले भरोसा करें

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّ مِنْ اَزْوَاجِكُمْ وَاَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا لَّكُمْ

ऐ ईमान वालो तुम्हारी कुछ बीबियां और बच्चे तुम्हारे दुश्मन हैं[22]

فَاحْذَرُوْهُمْ ۚ وَاِنْ تَعْفُوْا وَتَصْفَحُوْا وَتَغْفِرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ

तो उन से एहतियात रखो[23] और अगर मुआफ़ करो और दर गुज़र करो और बख़्श दो तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला

क्यूं कि इस की बदौलत गुमराही की तारीकियां दूर होती हैं और हर शै की ह़क़ीक़त वाज़ेह़ होती है। 15 : या'नी रोज़े क़ियामत जिस में सब अव्वलीन व आख़िरीन जम्अ़ होंगे। 16 : या'नी काफ़िरों की मह़रूमी ज़ाहिर होने का। 17 : मौत की या मरज़ की या नुक़्साने माल की या और कोई 18 : और जाने कि जो कुछ होता है अल्लाह तआला की मशिय्यत और उस के इरादे से होता है और वक़्ते मुसीबत ''اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّاۤ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ'' पढ़े और अल्लाह तआला की अ़ता पर शुक्र और बला पर सब्र करे 19 : कि वोह और ज़ियादा नेकियों और ताअ़तों में मश्ग़ूल हो। 20 : अल्लाह तआला और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की फ़रमां बरदारी से 21 : चुनान्चे उन्हों ने अपना फ़र्ज़ अदा कर दिया और कामिल त़ौर पर दीन की तब्लीग़ फ़रमा दी। 22 : कि तुम्हें नेकी से रोकते हैं 23 : और उन के कहने में आ कर नेकी से बाज़ न रहो। **शाने नुज़ूल :** चन्द मुसल्मानों ने मक्कए मुकर्रमा से हिजरत का इरादा किया तो उन की बीबी और बच्चों ने उन्हें रोका और कहा हम तुम्हारी जुदाई पर सब्र न कर सकेंगे तुम चले जाओगे हम तुम्हारे पीछे हलाक हो जाएंगे, येह बात उन पर असर कर गई और वोह ठहर गए, कुछ अ़र्से के बा'द जब उन्हों ने हिजरत की तो उन्हों ने अस्ह़ाबे रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को देखा कि वोह दीन में बड़े माहिर और

www.dawateislami.net

رَّحِيْمٌ ﴿١٤﴾ اِنَّمَآ اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ؕ وَ اللّٰهُ عِنْدَهٗۤ اَجْرٌ

मेहरबान है तुम्हारे माल और तुम्हारे बच्चे जांच ही हैं[24] और अल्लाह के पास बड़ा

عَظِيْمٌ ﴿١٥﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَاسْمَعُوْا وَاَطِيْعُوْا وَاَنْفِقُوْا

सवाब है[25] तो अल्लाह से डरो जहां तक हो सके[26] और फ़रमान सुनो और हुक्म मानो[27] और अल्लाह की राह में ख़र्च करो

خَيْرًا لِّاَنْفُسِكُمْ ؕ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿١٦﴾

अपने भले को और जो अपनी जान की लालच से बचाया गया[28] तो वोही फ़लाह पाने वाले हैं

اِنْ تُقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعِفْهُ لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ

अगर तुम अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दोगे[29] वोह तुम्हारे लिये उस के दूने कर देगा और तुम्हें बख़्श देगा और अल्लाह

ع ٢ ١٢ شَكُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿١٧﴾ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١٨﴾

क़द्र फ़रमाने वाला हिल्म वाला है हर निहां और इयां का जानने वाला इज़्ज़त वाला हिक्मत वाला

اٰياتها ١٢ | ٦٥ سُوْرَةُ الطَّلَاقِ مَدَنِيَّةٌ ٩٩ | رکوعاتها ٢

सूरए तलाक़ मदनिय्या है, इस में बारह आयतें और दो रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ اِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَطَلِّقُوْهُنَّ لِعِدَّتِهِنَّ وَاَحْصُوا

ऐ नबी[2] जब तुम लोग औरतों को तलाक़ दो तो उन की इद्दत के वक़्त पर उन्हें तलाक़ दो और इद्दत

الْعِدَّةَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ رَبَّكُمْ ۚ لَا تُخْرِجُوْهُنَّ مِنْۢ بُيُوْتِهِنَّ وَلَا يَخْرُجْنَ

का शुमार रखो[3] और अपने रब अल्लाह से डरो इद्दत में उन्हें उन के घरों से न निकालो और न वोह आप निकलें[4]

फ़क़ीह हो गए हैं, येह देख कर उन्हों ने अपनी बीबी बच्चों को सज़ा देने का इरादा किया और येह क़स्द किया कि उन का ख़र्च बन्द कर दें क्यूं कि वोही लोग उन्हें हिजरत से मानेअ़ हुए थे जिस का येह नतीजा हुवा कि हुज़ूर के साथ हिजरत करने वाले अस्ह़ाब इल्म व फ़िक़्ह में उन से मन्ज़िलों आगे निकल गए, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और उन्हें अपने बीबी बच्चों से दर गुज़र करने और मुआफ़ करने की तरग़ीब फ़रमाई गई, चुनान्चे आगे इर्शाद फ़रमाया जाता है : 24 : कि कभी आदमी इन की वज्ह से गुनाह और मा'सियत में मुब्तला हो जाता है और इन में मश्ग़ूल हो कर उमूरे आख़िरत के सर अन्जाम से ग़ाफ़िल हो जाता है। 25 : तो लिहाज़ रखो ऐसा न हो कि अम्वाल व औलाद में मश्ग़ूल हो कर सवाबे अ़ज़ीम खो बैठो। 26 : या'नी ब क़द्रे अपनी वुस्अ़त व ताक़त के ताअ़त व इबादत बजा लाओ येह तफ़्सीर है "اِتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقَاتِهٖ" की 27 : अल्लाह तआ़ला और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का 28 : और उस ने अपने माल को इत्मीनान के साथ हुक्मे शरीअ़त के मुताबिक़ ख़र्च किया 29 : या'नी ख़ुशदिली से नेक निय्यती के साथ माले ह़लाल से सदक़ा दोगे, सदक़ा देने को बराहे लुत्फ़ो करम क़र्ज़ से ता'बीर फ़रमाया, इस में सदक़े की तरग़ीब है कि सदक़ा देने वाला नुक़्सान में नहीं है बिल यक़ीन इस की जज़ा पाएगा। 1 : सूरए तलाक़ मदनिय्या है, इस में दो 2 रुकूअ़, बारह 12 आयतें और दो सो उन्चास 249 कलिमे और

www.dawateislami.net